महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा (मून्दड़ी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

अंक-२२

अक्टूबर से दिसम्बर २०२४

विक्रमी संवत् २०८०-८१

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ।।

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री नायब सिंह सैनी
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री महिपाल ढांडा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

डॉ. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

डॉ. सत्येन्द्र कुमार गौतम

ई-मेल – publication@mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

mvsu.ac.in

शास्त्रं सुबोधमेवेदं सालङ्कारविभूषितम्।
काव्यं रसमयं चारू दृष्टान्तैः प्रतिपादितम्॥

मानवीय सभ्यता के उद्गम काल से ही भारत ज्ञान-विज्ञान आध्यात्मिक चेतना का प्रमुख केन्द्र रहा है। मानव लोक व्यवहार में रहते हुए अपनी जीवन शैली को किस प्रकार से आदर्श स्वरूप में स्थापित करे जो इह लौकिक यथार्थ को स्वीकार करते हुए उसे निःश्रेयश के मार्ग में रूपांतरित करें, इस अद्वितीय विचार परम्परा का जन्म तो वस्तुतः उपनिषद् काल में ही हो चुका था किन्तु भारतीय मनीषियों का ज्ञान भागीरथी प्रवाह वहीं तक कहाँ रुकने वाला था वह चिरकाल से प्रारम्भ होकर आज तक उसी तीव्रता से गतिमान है। महाभारत में श्रीमद्भगवद्गीता ने इस वास्तविकता को लोक-जीवन में प्रतिष्ठापित कराने का कृष्णार्जुन संवाद के माध्यम से सत्यनिष्ठ प्रयास किया और दूसरे सिरे पर आदिकवि वाल्मीकि ने रामकथा से उत्पन्न वसिष्ठ राम के संवाद के माध्यम से इस परम्परा की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण पद्धति प्रदान करते हुए अमृत तत्त्व को सम्पादित करने की सम्भावनाओं को लोक जीवन में जागृत करने का अपूर्व प्रयास किया।

मानवीय मेधा-कृत चिन्तन की पराकाष्ठा का परिचायक यह अनुपम ग्रंथ योगवाशिष्ठ ही है। परंपरा श्रीमद्भगवद्गीता को उपनिषदों के सारभूत ग्रन्थ के रूप में स्थापित करती है। वहीं योगवासिष्ठ एक ऐसा ग्रन्थ विशेष है जिसमें सहस्राब्दियों से सत्यपूर्ण विकसित भारतीय अध्यात्म-चिन्तन की वैविध्यपूर्ण परम्पराओं का मानवोपयोगी सर्वांगपूर्ण चिन्तन नवनीत के रूप में उपलब्ध होता है। भारतीय आध्यात्मिक साहित्य में योगवासिष्ठ ग्रंथ को अद्वैत वेदांत, आत्मज्ञान और वैराग्य का अनुपम ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ जीवन के गूढ़ रहस्यों, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों और आत्मा की शाश्वतता का अद्भुत विवेचन करता है। योगवासिष्ठ ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित है, जिसमें उन्होंने भगवान श्रीराम को वैराग्य, आत्मबोध और ब्रह्मज्ञान का उपदेश दिया है।

यह ग्रंथ जीवन की नश्वरता, मन की चंचलता और माया के प्रभाव को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि संसार केवल मन की कल्पना है और सत्य केवल ब्रह्म है। कथा शैली में प्रस्तुत इस ग्रंथ में अनेक दृष्टांतों और संवादों के माध्यम से जीवन के वास्तविक स्वरूप को समझाया गया है।

योगवासिष्ठ न केवल दार्शनिक विचारधारा को प्रकट करता है, बल्कि यह व्यावहारिक जीवन के लिए भी मार्गदर्शक है। इसमें आत्म-साक्षात्कार, वैराग्य और ध्यान साधना के माध्यम से मनुष्य को मोक्ष की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी गई है। वर्तमान समय में मानसिक तनाव और भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे भागती मानवता के लिए यह ग्रंथ आत्मिक शांति और मानसिक संतुलन का अमूल्य साधन है। यह ग्रंथ हमें यह सिखाता है कि संसार में रहते हुए भी मनुष्य कैसे अज्ञानी नहीं बल्कि आत्मज्ञानी बन सकता है और जीवन की असारता को समझकर आत्मबोध के उच्चतम स्तर को प्राप्त कर सकता है।

किसी सम्प्रदाय विशेष के बिना उल्लेखनीय यह ग्रंथ अत्यंत आदरणीय है। सुदूर भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक इसका पाठ, मूल तथा भाषानुवाद में चिरकाल से होता चला आ रहा है। वैष्णवपिपासु जनों के लिए जो महत्त्व श्रीमदभागवतपुराण और जन जन के मुखारबिंद में विराजमान रामचरितमानस का है तथा कर्मयोगियों के लिए भगवद्गीता का है वही महत्त्व तत्त्व-ज्ञानियों के लिए योगवासिष्ठ का है। रहस्यविद् विद्वानों के लिए जहाँ गहनतम दार्शनिक सिद्धान्तों का इसमें विवेचन है वहीं दूसरी ओर अबोध बालक भी इसकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होते हैं। ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं है, जिसका समाधान इस कालजयी रचना में प्राप्त न हो। यह ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें काव्य, उपाख्यान तथा दर्शन, सभी का ज्ञान सरल सुबोध दृष्टि से भरा हुआ है। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल के महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ द्वारा प्रस्तुत यह संकलन जिज्ञासुओं को प्रेम त्याग बलिदान सम्पूर्ण समर्पण की भावना एवं पुरुषार्थ चतुष्टय कि प्राप्ति में निःसंदेह अत्यन्त सहायक होगा।

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।
इदं समस्तविज्ञानशास्त्रकोशं विदुर्बुधा॥

सम्पादकः

गतिविधयः

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर 'वाल्मीकीय रामायण में गुरु-शिष्य परम्परा' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

17 अक्टूबर 2024 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में **महर्षि वाल्मीकि जयन्ती** के अवसर पर सामूहिक यज्ञ के पश्चात् **'वाल्मीकीय रामायण में गुरु-शिष्य परम्परा'** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें **मुख्य अतिथि प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल** (पूर्व निदेशक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर, पंजाब), **मुख्य वक्ता, प्रो. कृष्णा देवी** (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय), **अध्यक्ष** के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज** एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. रामानन्द मिश्र रहे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्रगण उपस्थित रहे।

NET-JRF परीक्षा उतीर्ण करने वाले छात्रों को कुलपति महोदय ने किया सम्मानित

23 अक्टूबर 2024 - सितम्बर महीने में एन.टी.ए. ने **NET-JRF** की परीक्षा आयोजित की थी इसका रिजल्ट घोषित होने के साथ ही महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में हर्षोल्लास और उत्साह का माहौल बन गया। क्योंकि इस बार महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के कुल 24 विद्यार्थी इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं। इसमें 04 छात्रों ने **NET** था 05 ने **JRF** की परीक्षा उत्तीर्ण की है। साथ ही **16 विद्यार्थी पी.एचडी** में प्रवेश के लिए उत्तीर्ण हुए हैं।

ज्योतिष विभाग द्वारा (ऑनलाइन एवं ऑफलाइन) आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी

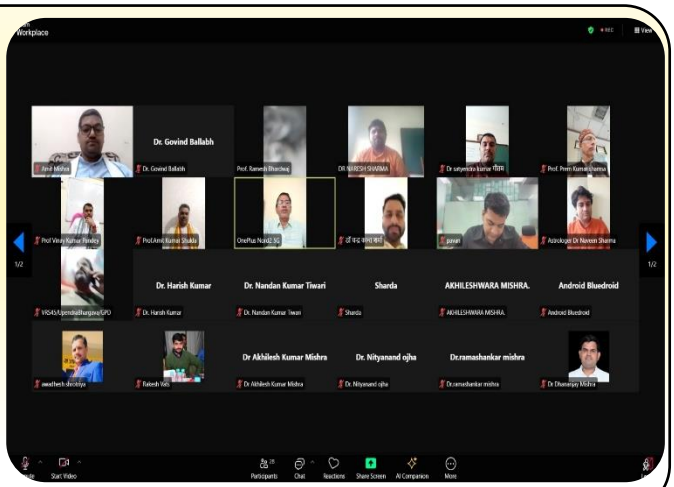

18 अक्टूबर 2024 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में ज्योतिष विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी की अध्यक्षता में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यमों से एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें 13 राज्यों के 14 संस्कृत विश्वविद्यालयों से ज्योतिष के प्राध्यापकों, ज्योतिषियों, पञ्चाङ्ग निर्माताओं तथा धर्मशास्त्रियों को आमन्त्रित कर शास्त्रसम्मत अनुसार 1 नवम्बर के स्थान पर 31 अक्टूबर को दीपावली का पर्व मनाने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. नरेश शर्मा (विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग) रहे।

गतिविधयः

"सितार-ए-पंजाब" पुरस्कार जीतने विश्वविद्यालय के छात्र को माननीय कुलपति महोदय ने किया छात्र को सम्मानित

11 नवम्बर 2024 को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने आचार्य (एम.ए.) के छात्र साहिल को हरियाणा सरकार द्वारा प्रमाणित **रुस्तम-ए-हिन्द कुश्ती वेल्फेयर संघ** द्वारा आयोजित **राज्य स्तरीय प्रतियोगिता** में **84 किलोग्राम वर्ग फ्री स्टाइल** कुश्ती में **''सितार-ए-पंजाब"** का पुरस्कार जीतने पर सम्मानित किया।

योग विभाग प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान हेतु एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण

23 नवम्बर 2024 को विश्वविद्यालय के योग विभाग के प्रभारी डॉ. देवेन्द्र सिंह एवं योग विभाग में अध्यापक श्री रोहित के मार्गदर्शन में **गांधी आश्रम, पट्टी कल्याणा, पानीपत** में **एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण** हेतु छात्रों को ले जाया गया । गान्धी आश्रम के **मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. आकाश** के द्वारा सभी छात्रों को प्राकृतिक चिकित्सा के मुख्य सिद्धान्तों का ज्ञान करवाया गया।

भारत दर्शन यात्रा पर आए 37 मेधावी विद्यार्थियों के साथ कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने किया संवाद

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के टीक परिसर में उत्तराखण्ड सरकार के माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 9 दिसम्बर से पांच दिवसीय यात्रा के लिए उत्तराखण्ड के मेधावी छात्र-छात्राएं हरियाणा के कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल व हिसार के विश्वविद्यालयों में जाकर उच्च शिक्षण संस्थानों का अनुभव हेतु 12 अक्टूबर को छात्रों का एक ग्रुप महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय में आए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज** ने सभी छात्रों के साथ संवाद किया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रेरित कर उन्हें शिक्षा, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को समझाना था। इस संवाद सत्र में विद्यार्थियों ने अपने शैक्षिक अनुभवों और यात्रा से जुड़ी जिज्ञासाओं के बारे में कुलपति से सवाल भी किए। यह संवाद सत्र उत्तराखण्ड के 37 मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए एक प्रेरणास्त्रोत साबित हुआ, जो उन्हें शिक्षा, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपने कर्तव्यों को समझने का अवसर प्रदान करेगा।

गतिविधयः

रुपक महोत्सव में विश्वविद्यालय ने प्राप्त किया सर्वश्रेष्ठ आहार्य पुरस्कार

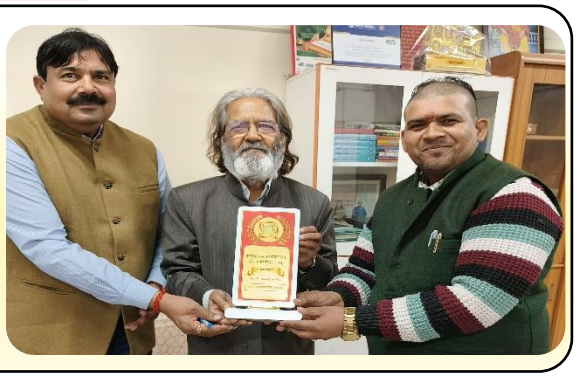

दिसम्बर 2024 को महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने **केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के रणवीर परिसर जम्मू** के द्वारा आयोजित **रुपक महोत्सव** में विश्वविद्यालय के छात्रों ने नाटक की प्रस्तुति में **सर्वश्रेष्ठ आहार्य पुरस्कार** प्राप्त किया। इस कार्यक्रम के **निर्देशक डॉ. नरेश शर्मा** (विभागाध्यक्ष ज्योतिष) एवं सह निर्देशक **डॉ रामानंद मिश्र** एवं **डॉ. शर्मिला** रहे।

संविधान दिवस के उपलक्ष्य में संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समारोह

26 नवम्बर 2024 को **माननीय मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार** के निर्देशानुसार **संविधान दिवस** के उपलक्ष्य में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज** की अध्यक्षता में आर. के. एस. डी. कालेज, कैथल में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के **मुख्य अतिथि श्री कृष्ण लाल पंवार** (कैबिनेट मन्त्री, विकास एवं पंचायत तथा खनन एवं भू-विज्ञान), **विशिष्ट अतिथि श्री सतपाल जाम्बा** (विधायक, पुण्डरी) उपस्थित रहे। इस अवसर पर कैथल प्रशासन से **सुश्री प्रीति** (उपायुक्त, कैथल), **श्री दीपक बाबू** (अतिरिक्त उपायुक्त), **श्री सुशील कुमार** (सी. ई. ओ. जिला परिषद्, कैथल), **श्रीमती कमलेश ढाण्डा** (पूर्व मन्त्री, महिला एवं बाल विकास), **श्री कर्मबीर कौल** (चेयरमैन, जिला परिषद्), **श्री मनीष कठवाड़** (जिला अध्यक्ष, बी.जे.पी.), **श्रीमती सुरभि गर्ग** (चेयरपर्सन, नगर परिषद), **श्री अशोक गुर्जर** (पूर्व जिला अध्यक्ष, बी.जे.पी.), विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बृजपाल, कार्यक्रम संयोजक **डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे** के साथ-साथ विश्वविद्यालय परिवार के सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम से पूर्व हरियाणा सरकार के माननीय मुख्यमंत्री कोष से विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए दान में दी गई बस का उद्घाटन किया गया।

वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम

26 दिसम्बर 2024 को **वीर बाल दिवस** के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के टीक परिसर कैथल के सभागार में सिक्खों के **10वें गुरु गोविन्द सिंह** के वीर सपूतों **बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह** की शहादत की स्मृति में माननीय कुलपति **प्रो रमेश चन्द्र भारद्वाज जी** की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. नवीन शर्मा ने किया।इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जगत नारायण एवं सह संयोजक डॉ चन्द्रकान्त रहे।

अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय योगासन प्रतियोगिता में लहराया परचम

दिनांक **24 से 28 दिसम्बर 2024** तक भुवनेश्वर के केआईआईटी द्वारा आयोजित **अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय योगासन प्रतियोगिता** में विश्वविद्यालय के छात्रों ने **415 विश्वविद्यालयों** के **पाँच हजार** से अधिक विद्यार्थियों की कड़ी प्रतिस्पर्धा में से उत्कृष्ट प्रर्दशन करते हुए **तृतीय स्थान** पाकर **कांस्य पदक** जीता। छात्रों के उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज ने सभी छात्रों को सम्मानित किया व उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

प्रायश्चितशब्दविमर्श

भारत में सुदीर्घकाल तक मनीषियों ने चिन्तन करने के उपरान्त वर्णाश्रम व्यवस्था का निर्माण किया। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक एक सुदीर्घ परम्परा रही है, जिसमें आचार-संहिताओं का निर्माण किया गया है, जो आज हमें धर्मसूत्रों, स्मृतियों, पुराणों आदि में प्राप्त होती है। धर्मवेत्ताओं ने मनुष्य के वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्धारण किया तथा उन कर्मों का निषेध भी किया, जिनको करने पर वह दूषित हो जाता है। शास्त्रानुसार कार्य नहीं करने तथा दुष्कृत्य करने पर राजदण्ड, जातिदण्ड तथा प्रायश्चित्त देने हेतु इन व्यवस्थाओं का निर्माण किया गया

अकुर्वन् विहितं कर्म निन्दितं च समाचरन्। प्रसजंश्चेन्द्रियार्थेषु प्रायश्चित्तीयतेनरः॥ (मनुस्मृति, 11.44)

'प्रायश्चित्त' शब्द में प्रायः शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'अय गतौ' धातु में घञ् प्रत्यय के योग से पुल्लिंग में तथा 'असुन्' प्रत्यय के योग से नपुंसकलिंग में निष्पन्न होता है। इसके अर्थ हैं-प्रकृष्टमयनम् तथा बाहुल्यम्। 'चित्' धातु में 'क्त' प्रत्यय के योग से 'चित्त' शब्द निष्पन्न होता है। इसका अर्थ है- देखा हुआ, विचारित, इच्छित आदि। तदनुसार प्रायश्चित्त का अर्थ होगा सुविचारित अथवा इच्छित प्रस्थान। धर्मशास्त्रकारों ने 'प्रायश्चित्त' शब्द की परिभाषाएँ दी हैं-

प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते। तपोनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्॥ (उत्तरआंगिरसस्मृति 4.1)

अर्थात् प्रायः को 'तप' तथा चित्त को 'निश्चय' कहा जाता है। तप और निश्चय का संयोग ही प्रायश्चित्त कहा गया है। इस श्लोक को उद्धृत करते हुए प्रायश्चित्तविवेककार शूलपाणि ने कहा है कि जो निश्चय से संयुक्त तप, पापक्षय के साधन के रूप में निश्चित होता है, वही प्रायश्चित्त है-

निश्चयसंयुक्तं पापक्षयसाधनत्वेन निश्चितमित्यर्थः। प्रयतत्वाद्वोपचितमशुभं नाशयतीति प्रायश्चित्तम्। (प्रायश्चितविवेक पृष्ठ 3)

अर्थात् ऐसे कार्य (यथा-तप, दान, यज्ञादि) जिनसे व्यक्ति पवित्र होकर अपनेएकत्र हुए अशुभ कर्मों (पापों) का क्षय कर देता है, वह प्रायश्चित्त है। इस प्रकार पाप के क्षयमात्र का साधनकर्म प्रायश्चित्त है-

एतेन पापक्षयमात्रसाधनं कर्म प्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्तलक्षणम्।

अंगिरा के उपर्युक्त प्रायश्चित्त-लक्षण के सन्दर्भ में चतुर्वर्गचिन्तामणिकार हेमाद्रि ने किसी अज्ञात भाष्यकार को उद्धृत किया है-

प्रायोविनाशः चित्तं सन्धानं विनष्टस्य सन्धानम् इति विभागयोगेन प्रायश्चित्तशब्दः पापक्षयार्थे नैमित्तिके कर्मविशेषे वर्तते।

(चतुर्वर्गचिंतामणि पृष्ठ 989)

सरल रूप में शास्त्रविहित कर्म को न करना तथा शास्त्रविरुद्ध कर्म का आचरण ही पाप है, इन्द्रियों के असंयम से होने वाला दुष्कर्म पाप है और पाप कर लेने के उपरान्त जब व्यक्ति को अपने दुष्कृत्य का ज्ञान होने पर पश्चात्ताप होता है, तब वह प्रायश्चित्त के योग्य होता है, उस समय उसे प्रायश्चित्त करना चाहिये।

निष्कर्षतः प्रायश्चित्त वह काम्य एवं नैमित्तिक कर्म है, जो पाप कर्म का ज्ञान होने पर, उसके क्षय हेतु किया जाता है और जो विद्वानों की परिषद् द्वारा अनुमत होता है और जिसे कर लेने के उपरान्त वह व्यक्ति पुनः समाज में व्यवहार के योग्य हो जाता है। स्मृतिशास्त्रों एवं पौराणिक ग्रंथों में प्रायश्चित के अनेक रूपों का वर्णन प्राप्त होता है जो कि पापक्षय साधन के स्वरूप है।

डॉ सत्येन्द्र कुमार गौतम

सहायक आचार्य धर्मशास्त्र

संस्कारों की उपयोगिता

सभ्यता के आरम्भ में जीवन आज की अपेक्षा नितान्त साधारण था और वह विविध खंडों में विभक्त नहीं हुआ था। सामाजिक संस्थाएँ, विश्वास, भावनाएँ, कलाएँ तथा विज्ञान आदि सभी परस्पर एक-दूसरे में मिश्रित थे। संस्कारों ने जीवन के इन सभी क्षेत्रों को व्याप्त किया।

प्रोक्षणादिजन्यसंस्कारो यज्ञाङ्गपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः।

स्नानाचमनादिजन्याः संस्कारा देहे उत्पद्यमानानि तदभिधानानि जीवे कल्प्यन्ते। वही

-वाचस्पत्य बृहदभिधान, ५, पृ० ५१८८।

संस्कार मानवजीवन के परिष्कार और शुद्धि में सहायता पहुँचातने व्यक्तित्व के विकास को सुविधाजनक करने एवं मनुष्य-देह को पवित्रता तथा महत्त्व प्रदान करने के लिए मनुष्य की समस्त भौतिक तथा आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षाओं को गति देते तथा अन्त में उसे जटिलताओं और समस्याओं के संसार से सरल तथासानन्द मुक्ति के लिए उपयुक्त मार्ग है।अनेक सामाजिक महत्त्व की समस्याओं के समाधान में भी वे सहायक थे। उदाहरणार्थ गर्भाधान तथा अन्य प्राग्-जन्म-संस्कार यौन-विज्ञान और प्रजनन-शास्त्र से सम्बद्ध थे। जब स्वास्थ्य-विज्ञान तथा प्रजनन-शास्त्र का विज्ञान की स्वतन्त्र शाखा के रूप में विकास नहीं हुआ था, उस समय इस प्रकार के विषयों में संस्कार ही शिक्षा के माध्यम का कार्य करते थे।

इसी प्रकार विद्यारम्भ तथा उपनयन से समावर्तन पर्यन्त सभी संस्कार शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है प्राचीन काल से ही जनसाधारण में अनिवार्य शिक्षा को लागू करने के लिए कोई धर्मनिरपेक्ष या लौकिक माध्यम न था शिक्षा अनिवार्य होने के कारण संस्कारों द्वारा इस प्रयोजन की भी पूर्ति हुआ करती थी।शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से अयोग्य न होने पर प्रत्येक बालक को शिक्षा के अनिवार्य पाठ्यक्रम से होकर गुजरना होता था, जिसमें अध्ययन तथा कठोर अनुशासन का समावेश था। इससे प्राचीन समाज के उच्च बौद्धिक तथा सांस्कृतिक स्तर की रक्षा में योग मिलता था। विवाह के प्रकारों, उसकी सीमाओं, वर और वधू के वरण तथा वैवाहिक विधि-विधान के सम्बन्ध में निश्चित नियमों के निर्धारण के द्वारा विवाह संस्कार अनेक यौन तथा सामाजिक समस्याओं का नियमन करता था। निस्सन्देह, इन नियमों की प्रवृत्ति समाज को स्थिर तथा गतिहीन बना देने की ओर थी, किन्तु सामाजिक समुदायों और पारिवारिक जीवन को स्थायित्व प्रदान करने तथा सुखी बनाने में उनसे सहायता मिली। अन्तिम संस्कार अन्त्येष्टि मृतक तथा जीवित के प्रति गृहस्थ के कर्तव्यों में सामञ्जस्य स्थापित करता था। यह पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य-विज्ञान का एक विस्मय-जनक समन्वय था, तथा जीवित सम्बन्धियों को सान्त्वना प्रदान करता था। इस प्रकार संस्कार व्यवहार में मानवजीवन तथा उसके विकास की क्रमबद्ध योजना का कार्य करते थे।

निकिता

(आचार्य प्रथम वर्ष, धर्मशास्त्र)

राष्ट्रगीतम्

रत्नगर्भा धरा सुस्मिता श्यामला,
दिव्यतीर्धास्तटाः पर्वताः सिन्धवः।
निर्झरा वाटिकाश्चात्र देवालयाः,
भव्यमेतत् प्रियं भारतं भूतले ।।

वेद-वेदाङ्ग-साहित्यरत्नाकराः,
सन्ति विद्या-कला कामदा मोक्षदा।
रम्यरामायणं श्रीमहाभारतम्,
राष्ट्रमेतद् वरं भारतं भूतले ।।

यत्र नद्यश्च नार्यश्च गावस्तथा,
मातरः सन्ति पूज्याः सदा वत्सलाः।
शारदा-श्रीप्रदा- सिद्धिदा-मातृणां,
शक्तियुक्तं शिवं भारतं भूतले ।।

यत्र लोकार्चने तत्परा मानवाः,
सन्ति सन्तो महान्तश्च विज्ञानिनः।
तत्र भूमीरियं धीमतां श्रीमतां,
देशिकानामिदं भारतं भूतले ।।

सन्तु बालाः स्वदेशे प्रवीरास्सदा,
सन्तु सभ्याः प्रबुद्धाश्च सर्वे जनाः।
प्राणिनो निर्भयाः सन्तु लोके प्रभो,
सर्वतो मंगलं भारतं भूतले ।।

प्रश्नमञ्जरी

(1) विक्रमोर्शायम् नाटक का नायक है-
(क) विक्रमादित्य (ख) अग्निमित्र (ग) विक्रम (घ) पुरुरवा

(2) मालविकाग्निमित्रम् में मालविका के नायत्याचार्य है-
(क) हरदत्त (ख) वीरसेन (ग) गणदास (घ) वसुमित्र

(3) रघुवंश महाकाव्य में सर्ग हैं-
(क) 20 (ख) 21 (ग) 14 (घ) 19

(4) नाटक में कम से कम व अधिक से अधिक अङ्क होने चाहिए -
(क) 4-7 (ख) 5-10 (ग) 5-7 (घ)7-10

(5) सभी रूपकों का सामान्य लक्षण किस रूपक के समान होता है ?
(क) भाव (ख) नाटक (ग) प्रकरण (घ) प्रहरण

(6) अष्टाध्यायी में सर्वनाम संज्ञा विधायक सूत्रों की संख्या हैं-
(क) 03 (ख) 02 (ग) 04 (घ) 01

(7) संस्कृत वाङ्मय में ध्वनि विज्ञान का प्राचीन नाम है-
(क) व्याकरण (ख) शिक्षा (ग) निरूक्त (घ) स्वन

(8) क्षेमेन्द्र के काव्यों में सबसे बड़ा काव्य है-
(क) चारूचर्चा (ख) कलाविलास (ग) देशोपदेश (घ) चतुर्वर्ग संग्रह

(9) 'युधिष्ठिर विजय' के लेखक वासुदेव कहाँ के निवासी थे?
(क) काश्मीर (ख) कर्णाटक (ग) तमिलनाडु (घ) केरल

(10) संस्कृत का प्रथम दैनिक समाचार पत्र कहाँ से प्रकाशित हुआ ?
(क) लाहौर (ख) कलकता (ग) त्रिवेन्द्रम (घ) मैसूर

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(एकविंशति अंकस्य उत्तरम्)

(1) वैभाषिक (2) रामायण (3) मनुस्मृति (4) मृदंग (5) ज्योतिष
(6) ब्रह्मपुराण (7) वाल्मीकि (8) 18,000 (9) 06 (10) भास

कर्मफल

अवश्यं लभते सकाकर्ता फलं पापस्य कर्मणः ।
पाप कर्म करने वाले को उ फल अवश्य मिलता है ।
नचिरात् प्राप्यते लोके पापानां कर्मणां फलम् ।
सविषाणामिवान्नानां भुक्तानां क्षणदाचर ।।

राक्षस ! जैसे विष मिला भोजन खाने का प्रभाव तुरन्त पता चल जाता है उसी तरह पापी को अपने कर्मों का फल जल्दी ही मिल जाता है ।

अकुर्वन्तोऽपि पापानि शुचयः पापसंश्रयात् ।
परपापैर्विनश्यन्ति मत्स्या नागह्रदे यथा ।।

शुद्ध आचार-व्यवहार वाले मनुष्य यदि पापियों के सम्पर्क में आ जाते हैं तो वे उनके बुरे कार्यों से स्वयं कोई अनुचित कार्य न करने पर भी उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे सांप वाले तालाब की मछलियां नष्ट हो जाती हैं ।

बहवः साधवो लोके युक्तधर्ममनुष्ठिताः ।
परेषामपराधेन विनष्टाः सपरिच्छदाः ।।

उचित धर्म का पालन करने वाले अनेक सज्जन दूसरों के अपराधों के कारण परिवार सहित नष्ट हो जाते हैं ।